UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 16 राजा राममोहन राय (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

राजा राममोहन राय का जन्म पश्चिम बंगाल में 11 मई, 1772 ई० को हुगली जिले के राधानगर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम रमाकांत राय और माता का नाम तारिणी देवी था। इनकी आरम्भिक शिक्षा घर पर बांग्ला भाषा में हुई। पटना से उन्होंने अरबी तथा फारसी की उच्च शिक्षा प्राप्त करके काशी में संस्कृत का अध्ययन किया। उन्होंने अँग्रेजी भी मन लगाकर पढ़ी। वेदान्त और उपनिषदों के प्रभाव से इनको दृष्टिकोण उदारवादी था।

इन्होंने तिब्बत जाकर बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। लौटने पर विवाह होने के बाद पारिवारिक निर्वाह के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी में क्लर्क के पद पर नौकरी कर ली। नौकरी के समय अँग्रेजी, लैटिन और ग्रीक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। 40 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर ये कोलकाता में रहकर समाजसेवा में लग गए। इस दिशा में इन्होंने सती–प्रथा का विरोध, अन्धविश्वासों का विरोध, बहु-विवाह विरोध और जाति प्रथा का विरोध किया। विधवाओं के पुनर्विवाह और पुत्रियों को पिता की सम्पत्ति दिलवाने की दिशा में कार्य किया।

उदारवादी दृष्टिकोण के कारण इन्होंने 'आत्मीय सभा' बनाई जिसका उद्देश्य "ईश्वर एक है" का प्रचार था। एक ईश्वर की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए 'ब्रह्मसभा' की स्थापना की, जिसका बाद में नाम बदलकर 'ब्रह्मसमाज' रख दिया। इसमें सभी धर्मों की अच्छी बातों का समावेश था। सन् 1821 ई० में 'संवाद-कौमुदी' बांग्ला साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। फिर फारसी में अखबार प्रकाशित किया। वे अँग्रेजी शिक्षा के पक्षघर थे। सन् 1824 ई० में उन्होंने वेदान्त कॉलेज की स्थापना की। जिसमें भारतीय विद्या के अलावा सामाजिक व भौतिक विज्ञान भी पढ़ाई जाती थी।

राजा राममोहन राय ने प्रशासन में सुधार के लिए आन्दोलन किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध शिकायत ' लेकर 8 अप्रैल 1831 ई० को इंग्लैण्ड गए। वे पेरिस भी गए। 27 सितम्बर 1833 ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

https://www.evidyarthi.in/